सज्जनश्रीजी महाराज अभिनन्दन ग्रन्थ(फोल्डर नं. ९२०२८)

मुख्य टाइटल

समर्पण सुमन

आशीर्वचन

प्रकाशक के बोल

आदिवचन

एक धन्य अवसर की प्राप्ति

अनुक्रमणिका

प्रथम खण्ड – जीवन ज्योति ---------- १-१७८

जीवन ज्योति (जीवन चरित्र) ---------- १

प्रवर्तिनी सज्जनश्री म. के यशस्वी चातुर्मास की सूची ---------- ८८

प्रवर्तिनीश्री जी का शिष्या परिवार ---------- ९०

आदर्श माताश्री महेताबबाई लूनिया ---------- ९३

धर्मनिष्ठ श्रावक पिताश्री गुलाबचन्दजी लूनिया ---------- ९६

श्री केसरचन्दजी लूनिया व परिवार-परिचय ---------- १०२

गोलेच्छा परिवार परिचय ---------- १०५

श्रीमान कल्याणमलजी गोलेच्छा ---------- १०६

चरितनायिका केजीवन में नया मोड़ देने वाला बाफना परिवार ---------- १०७

व्यक्तित्व परिमल-संस्मरण एवं प्रेरक प्रसंग ---------- १०९-१५४

कृतित्व दर्शन-साहित्य समीक्षा

प्रवर्तिनी सज्जनश्रीजी महाराज का अद्भुत अनुवाद-कौशल ---------- १५५

आर्या सज्जनश्रीजी की काव्य साधना ---------- १५९

सफल अनुवाद करयित्री आर्यारत्न प्र. सज्जनश्रीजी ---------- १६६

एक श्रेष्ठ जीवन चरित्र-पुष्प जीवन ज्योति ---------- १६८

एक बहुआयामी समग्र व्यक्तित्व प्रवर्तिनी सज्जनश्री महाराज ---------- १७१

द्वितीय खण्ड

आशीर्वचन-शुभकामनाएँ, अभिनन्दन---------- १-३८

श्रद्धार्चन काव्यांजलियाँ ---------- ३९-६०

तृतीय खण्ड – इतिहास के उज्ज्वल पृष्ठ ----------१-११८

खरतरगच्छ का संक्षिप्त परिचय ---------- १-३५

खरतरगच्छ का उद्भव ---------- १

आचार्य वर्धमानसूरि ---------- ५

जिनेश्वरसूरि ---------- ७

जिनचन्द्रसूरि ---------- ७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभयदेवसूरि ---------- ७
जिनवल्लभसूरि ----------८
जिन-युगप्रधान दादा जिनदत्तसूरि ---------- १०
मणिधारी जिनचन्द्रसूरि ---------- ११
युगप्रवरागम जिनपतिसूरि ----------१२
जिनेश्वरसूरि (द्वितीय) ---------- १६
जिनप्रबोधसूरि ----------१८
कलिकाल केवली जिनचन्द्रसूरि ---------- १९
दादा श्री जिनकुशलसूरि ----------२१
जिनपद्मसूरि ---------- २३
जिनलब्धिसूरि ---------- २४
जिनचन्द्रसूरि ---------- २४
जिनराजसूरि ---------- २५
जिनभद्रसूरि ---------- २६
जिनचन्द्रसूरि ---------- २७
जिनसमुद्रसूरि ---------- २७
जिनहंससूरि ---------- २८
जिन माणिक्यसूरि ---------- २८
युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि ---------- २८
जिनसिंहसूरि ----------३१
जिनराजसूरि ---------- ३२
जिनरत्नसूरि ---------- ३४
जिनचन्द्रसूरि ---------- ३४
जिनसुखसूरि ---------- ३४
जिनभक्तिसूरि ---------- ३५
जिनलाभसूरि ---------- ३५
चार दादा गुरुओं का संक्षिप्त जीवन परिचय ---------- ३६
क्रान्ति के विविधरूप तथा धार्मिक क्रान्तिकारक ---------- ३७
खरतगच्छ की संविग्न साधु परम्परा का परिचय ---------- ४४
सुखसागरजी म. का समुदाय ---------- ४४-५४
श्री जिनकृपाचन्द्रसूरिजी का समुदाय ---------- ५४-५६
श्री मोहनलालजी म.का समुदाय ---------- ५६-६४
सुखसागरजी म. के समुदाय की साध्वी परम्परा का परिचय ---------- ५९-६४
शिवश्रीजी म. का समुदाय ---------- ६५
स्व. आचार्यश्री जिनकवीन्द्रसागर सूरिजी म. ---------- ६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खरतरगच्छीय साध्वी परम्परा ---------- ७०
खरतरगच्छीय की गौरवमयी परम्परा ---------- ७८
खरतरगच्छ के तीर्थ व जिनालय ---------- ८०
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, जयपुर, एक परिचय ---------- १०६
प्र. सिंहश्रीजी के साध्वी समुदाय का परिचय ---------- १०९
खरतरगच्छाचार्यों द्वारा प्रतिबोधित गोत्र जिनका मूल गच्छ खरतर है ----------११८
चतुर्थ खण्ड-धर्म, दर्शन एवं अध्यात्म-चिन्तन ----------१-११८
अर्ह का विराट स्वरूप – संघ प्रमुख चन्दन मुनि ---------- १
अप्पा सो परमप्पा – डॉ. हुकमचन्द्र जैन ---------- ५
जैन दर्शन में कर्म-सिद्धान्त – श्री नित्यानन्द विजयजी ---------- १५
स्वास्थ्य पर धर्म का प्रभाव – युवाचार्य महाप्रज्ञ ---------- १७
जैनधर्म में मनोविद्या – गणेश लालवाणी ---------- २०
धर्म-साधना के तीन आधार – श्री देवेन्द्र मुनि ---------- २७
जैनधर्म विश्वधर्म बन सकता है – काका कालेलकर ---------- ३६
अनिवर्चनीय आनन्द का स्रोत-स्वानुभूति – मुनिश्री अमरेन्द्र विजय ---------- ३८
जैनदर्शन और योग दर्शन में कर्म-सिद्धान्त – रतनलाल जैन ---------- ४८
जैन शिक्षा-स्वरूप और पद्धति – डॉ. नरेन्द्र भानावत ---------- ५८
सम्यग् आचार की आधारशिला-सम्यक्त्व – साध्वीश्री सुरेशाश्रीजी ---------- ६५
नमस्कार महामन्त्र-वैज्ञानिक दृष्टि – साध्वी श्री राजीमतीजी ---------- ७०
स्वरूप-साधना का मार्ग-योग एवं भक्ति – आचार्य मुनिश्री सुशीलकुमारजी ---------- ७३
आत्मकेन्द्रित एवं ईश्वरकेन्द्रित धर्म-दर्शन – डॉ. मांगीलाल कोठारी ---------- ७६
जैन हिन्दी काव्य में सामायिक – डॉ. अलका प्रचण्डिया ---------- ८२
जैनधर्म-स्वरूप एवं उपादेयता – महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर ---------- ८४
जैन साधक के षडावश्यक कर्म – महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर ---------- ८६
जर्मनी के जैन मनीषी डॉ. हरमन याकोबी - डॉ. पवन सुराणा ---------- ९२
सामायिक का स्वरूप व उसकी सम्यक् परिपालना – पं. कन्हैयालाल दक ---------- ९५
अनेकान्तवाद् और स्याद्वाद् – डॉ. चेतन प्रकाश पाटणी ---------- १००
हिंसा घृणा का घर-अहिंसा अमृत का निर्झर – डॉ. आदित्य प्रचण्डिया ---------- १०४
क्रोध-स्वरूप एवं निवृत्ति के उपाय – साध्वी हेमप्रज्ञाश्रीजी ---------- १०७
जैन कला में तीर्थंकरो का वीतरागी स्वरूप – डॉ. मारुतीनन्दन तिवारी, डॉ. चन्द्रदेवसिंह ---- ११४
पंचम खण्ड – नारी-त्याग, तपस्या एवं सेवा की सुरसरि ---------- ११९-१८०
जैन आगमिक व्याख्या साहित्य में नारी की स्थिति का मूल्यांकन – प्रो. सागरमल जैन ------ ११९
भारतीय नारी-युग-युग में और आज – राष्ट्रसन्त मुनि श्री नगराज जी.डी. ---------- १४३
जैन आगमों में वर्णित ध्यान-सधिकाएँ – डॉ. शान्ता भानावत ---------- १५०
प्राकृत साहित्य में वर्णित शील-सुरक्षा के उपाय – डॉ. हुकमचन्द जैन ---------- १५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान महावीर की दृष्टि में नारी – विमल महेता ---------- १६२
सतीप्रथा और जैनधर्म - रज्जनकुमार ---------- १६३
अहिंसा अपरिग्रह के सन्दर्भ में नारी की भूमिका – श्रीमती सरोज जैन ---------- १६९
नारी-मानवता का भविष्य – सुरेन्द्र बोथरा ---------- १७३
जैनधर्म को जनधर्म बनाने में महिलाओं का योगदान – आर्या प्रियदर्शनाश्रीजी ---------- १७८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org